SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन

लक्ष्मीकांत गोस्वामी, (Ph.D.), प्राचार्य
इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एंड टेक्नीकल एजूकेशन, पिपरोली, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
लक्ष्मीकांत गोस्वामी, (Ph.D.), प्राचार्य
इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एंड टेक्नीकल एजूकेशन, पिपरोली, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/03/2021
Revised on : -----
Accepted on : 25/03/2021
Plagiarism : 03% on 18/03/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

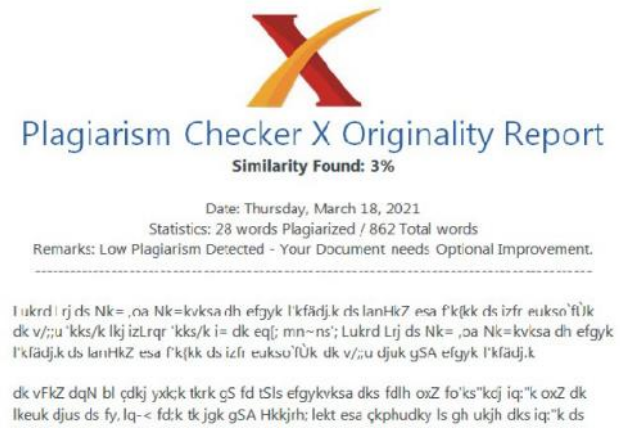

Date: Thursday, March 18, 2021
Statistics: 28 words Plagiarized / 862 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Lukrd Lrj ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh efgyk l'kfädj.k ds lanHkZ esa f'k{kk ds izfr eukso`fÙk dk v/;;u 'kks/k lkj izLrqr 'kks/k i= dk eq[; mn~ns'; Lukrd Lrj ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh efgyk l'kfädj.k ds lanHkZ esa f'k{kk ds izfr eukso`fÙk dk v/;;u djuk gSA efgyk l'kfädj.k

dk vFkZ dqN bl çdkj yxk;k tkrk gS fd tSls efgykvksa dks fdlh oxZ fo'ks"kdj iq:"k oxZ dk lkeuk djus ds fy, lq-< fd;k tk jgk gSA Hkkjrh; lekt esa çkphudky ls gh ukjh dks iq:"k ds

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ कुछ इस प्रकार लगाया जाता है कि जैसे महिलाओं को किसी वर्ग विशेषकर पुरूष वर्ग का सामना करने के लिए सुदृढ किया जा रहा है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। उसे अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मानित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया। यहां तक कि शिक्षा और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं को अपनी प्रतिभा को निखारने और मुखरित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गयी। छात्र एवं छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता तो रहती ही है परंतु यह शोध का विषय है कि महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति इनकी मनोवृत्ति किस प्रकार की होती है। इन्हीं तथ्यों को शोध पत्र में वर्णित किया गया है।

मुख्य शब्द

महिला सशक्तिकरण, शिक्षा एवं मनोवृत्ति.

आज महिलायें सशक्त होकर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। वे आज आसमान छूने, स्वच्छन्दता से विचरण करने के लिए उत्साहित हैं। महिलायें सोशल मीडिया के माध्यम से आज काफी आगे बढ़ गई हैं। महिलायें ऑनलाइन सक्रियता के माध्यम से, अपनी बेबाक राय समाज के समक्ष प्रस्तुत कर रही हैं। कई महिलायें आज उद्यमी के रूप अपनी सफल पहचान बना रही हैं। कला, अभिनय, विज्ञान एवं कई क्षेत्रों में आज महिलायें अपना परचम फहरा रही हैं। प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति ऐसी नहीं थी उन्हें काफी कष्टों

का सामना करते हुए अपना जीवनयापन करना पड़ता था।

''वैदिक काल के पश्चात ''सामाजिक विचार धारा और कानून की दृष्टि से समाज में स्त्रियों के लिये पराधीनता सूचक विधि–विधानों की नींव पड़ी।'' *(देसाई नीरा ''भारतीय समाज में नारी 1982 पृष्ठ 7)*

मनुस्मृति में सर्वप्रथम स्त्रियों की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया गया, उन्हें वेद अध्ययन एवं यज्ञ करने से रोक दिया गया। कर्मकाण्डों की जटिलता, पवित्रता की धारणा में वृद्धि तथा आर्यो का अनार्य स्त्रियों के साथ अर्न्तजातीय विवाह के कारण महिलाओं को धार्मिक एवं सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया।

मनोवृत्ति

मनोवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार का प्रतिबिम्ब होती है, व्यक्ति जैसा व्यवहार प्रदर्शन करता है वही उसकी मनोवृत्ति कहलाती है। मनोवृत्ति शब्द हमेशा से ही अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए जिज्ञासा का शब्द बना हुआ है।

शोध के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के छात्रों की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के 2 महाविद्यालय से 50 विद्यार्थी जिसमें (25 छात्र एवं 25 छात्राओं) को सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

एन.एस.चौहान एवं सरोज अरोरा की अभिवृत्ति मापनी का प्रमाणीकृत उपकरण प्रयोग किया गया है।

तथ्य विश्लेषण विधियां

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी–मान

सांख्यिकीय विश्लेषण

परिकल्पना 1

स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिकाः स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का प्रामाणिक विचलन एवं टी मान को दर्शाती तालिका

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
स्नातक छात्र	7.33	2.5	48	0.01	2.69	1.26
स्नातक छात्रायें	6.54	1.9		0.05	2.02	

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

48 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.69 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.02 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.26 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है, अर्थात् स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता क्योंकि महिला सशक्तिकरण के लिये छात्र एवं छात्राऐं समान रूप से ही अपनी मनोवृत्ति रखते हैं क्योंकि ये दोनों हर हाल में ही महिला को सशक्त बनाने के पक्षधर हैं। आज पुरूष वर्ग भी महिलाओं को सुरक्षित माहौल देने के लिये हर हाल में प्रयत्नशील हैं, जबकि महिलाऐं स्वयं सशक्त हो रही हैं।

सुझाव

यहाँ शोधार्थी द्वारा महिला उत्पीड़न एवं सशक्तिकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को पुरुष के बराबरी का अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार महिलाओं के विरुद्ध बरते जाने वाले सभी प्रकार के भेद भाव समाप्त कर जनजाग्रति में सहायक बने।
2. बालिकाओं एवं युवतियों को सभी स्तर की शिक्षण संस्थाओं में समान पहुंच, सभी प्रकार के डिप्लोमा, डिग्री प्रदान करने के अवसर, ग्रामीण एवं नगर में प्रदान किये जाने चाहिए।
3. महिलाओं एवं पुरुषों के लिए एक जैसे पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, अध्यापन, विद्यालय, प्रयोगशालायें आदि की उपलब्धतता होनी चाहिए।
4. बिना संकोच के महिला कार्य कर सके, इसलिए सह–शिक्षा एक स्वस्थ वातावरण में होनी चाहिए जिससे महिला पुरुषों के साथ कार्य कर सके।

संदर्भ सूची

1. अरविंद, *पंचायतों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण योजना,* अक्टूबर 2008।
2. आनन्द एन., *वूमेन इन इण्डियन सोसायटी,* रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. अल्तेकर, एस.एस, द पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन बनारसीदास मोतीलाल पब्लिशर्स कम्पनी बनारस, 1956।
4. वर्मा सरोज कुमार, सशक्तीकरण के भारतीय सदी (बी.आर.ए. बिहार) विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के दर्शनशास्त्र विभाग में व्याख्यता अक्टूबर 2008।
5. भार्गव महेश, *''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन''* एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 2009।
6. भट्ट जय श्री एस., *वैवाहिक हिंसा एवं भारतीय अस्मिता,* आदित्य पब्लिशन बीना, सागर।

****